(७) ऐसे मुविर देखे वन में...

ऐसे मुनिवर देखे वन में, जाके राग-द्वेष नहीं मन में ॥ टेक ॥

ग्रीष्म ऋतु शिखर के ऊपर, मगन रहे ध्यानन में ॥ 1 ॥

चातुर्मास तरुतल ठाढ़े, बूँद सहे छिन-छिन में ॥ 2 ॥

शीत मास दरिया के किनारे, धीरज धारें ध्यानन में ॥ 3 ॥

ऐसे गुरु को मैं नित प्रति ध्याऊँ, देत ढोक चरणन में ॥ 4 ॥